४. तुम मुझे खून दो

– *नेताजी सुभाषचंद्र बोस*

परिचय

जन्म : १८९७, कटक (उड़ीसा)

मृत्यु : १९४५ (अनुमानित)

परिचय : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रखर क्रांतिकारी नेताजी सुभाषचंद्र बोस जी ने 'जय हिंद' और 'चलो दिल्ली' का उद्‌घोष देकर भारतीय सैनिकों में एक नया जोश भर दिया था । आपने अपने जीवनकाल में अनेक बार नौजवानों को संबोधित किया । आप भारतीय युवकों के प्रेरणास्रोत बन गए ।

प्रमुख कृतियाँ : 'एक भारतीय यात्री' (An Indian pilgrim) (यह अपूर्ण आत्मकथा है ।), 'भारत का संघर्ष' (The Indian Struggle) (दो खंडों में)। स्वतंत्रता संघर्ष के संदर्भ में अगणित पत्र लिखे, भाषण दिए तथा रेडियो के माध्यम से भी व्याख्यान दिए जो संकलित किए गए हैं ।

गद्‍य संबंधी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वनामधन्य नेताजी सुभाषचंद्र बोस का योगदान अविस्मरणीय है । द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध के समय 'आजाद हिंद सेना' को स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु युद्‌ध करने के लिए प्रेरित करते हुए आपने यह भाषण दिया था । आपका कहना था कि 'स्वतंत्रता की राह शहीदों के खून से ही बनती है । खून देकर ही आजादी की कीमत चुकाई जा सकती है ।' आपका आग्रह था कि देशवासियों को इसके लिए तत्पर रहना चाहिए ।

दोस्तो ! बारह महीने पहले पूर्वी एशिया में भारतीयों के सामने 'संपूर्ण सैन्य संगठन' या 'अधिकतम बलिदान' का कार्यक्रम पेश किया गया था । आज मैं आपको पिछले साल की हमारी उपलब्धियों का ब्योरा दूँगा तथा आने वाले साल की हमारी माँगें आपके सामने रखूँगा । ऐसा करने से पहले मैं आपको एक बार फिर यह एहसास कराना चाहता हूँ कि हमारे पास आजादी हासिल करने का कितना सुनहरा अवसर है ।

हमारे संघर्ष की सफलता के लिए मैं बहुत अधिक आशावादी हूँ क्योंकि मैं केवल पूर्व एशिया के ३० लाख भारतीयों के प्रयासों पर निर्भर नहीं हूँ । भारत के अंदर एक विराट आंदोलन चल रहा है तथा हमारे लाखों देशवासी आजादी हासिल करने के लिए अधिकतम दुख सहने और बलिदान के लिए तैयार हैं । दुर्भाग्यवश, सन १८५७ के महान संघर्ष के बाद से हमारे देशवासी निहत्थे हैं जबकि दुश्मन हथियारों से लदा हुआ है । आज के इस आधुनिक युग में निहत्थे लोगों के लिए हथियारों और एक आधुनिक सेना के बिना आजादी हासिल करना नामुमकिन है । अब जरूरत सिर्फ इस बात की है कि अपनी आजादी की कीमत चुकाने के लिए भारतीय स्वयं आगे आएँ ! 'संपूर्ण सैन्य संगठन' के कार्यक्रम के अनुसार मैंने आपसे जवानों, धन और सामग्री की माँग की थी । मुझे आपको बताने में खुशी हो रही है कि हमें पर्याप्त संख्या में रंगरूट मिल गए हैं । हमारे पास पूर्वी एशिया के हर कोने से रंगरूट आए हैं-चीन, जापान, इंडोचीन, फिलीपींस, जावा, बोर्नियों, सेलेबस, सुमात्रा, मलाया, थाईलैंड और बर्मा से ।

आपको और अधिक उत्साह एवं ऊर्जा के साथ जवानों, धन तथा सामग्री की व्यवस्था करते रहना चाहिए, विशेष रूप से आपूर्ति और परिवहन की समस्याओं का संतोषजनक समाधान होना चाहिए । सबसे बड़ी समस्या युद्‌धभूमि में जवानों और सामग्री की कुमक पहुँचाने की है । यदि हम ऐसा नहीं करते तो हम मोर्चों पर अपनी कामयाबी को जारी रखने की आशा नहीं कर सकते, न ही हम भारत के आंतरिक भागों तक पहुँचने में कामयाब हो सकते हैं ।

आपमें से उन लोगों को, जिन्हें आजादी के बाद देश के लिए काम जारी रखना है, यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि पूर्वी एशिया-विशेष रूप से बर्मा हमारे स्वातंत्र्य संघर्ष का आधार है । यदि आधार मजबूत नहीं है तो हमारी लड़ाकू सेनाएँ कभी विजयी नहीं होंगी । याद रखिए कि यह एक 'संपूर्ण युद्ध' है- केवल दो सेनाओं के बीच का युद्ध नहीं है, इसीलिए पिछले पूरे एक वर्ष से मैंने पूर्व में 'संपूर्ण सैन्य संगठन' पर इतना जोर दिया है । मेरे यह कहने के पीछे कि आप घरेलू मोर्चे पर और अधिक ध्यान दें, एक और भी कारण है । आने वाले महीनों में मैं और मंत्रिमंडल की युद्ध समिति के मेरे सहयोगी युद्ध के मोर्चे पर और भारत के अंदर क्रांति लाने के लिए भी अपना सारा ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं । इसीलिए हम इस बात को पूरी तरह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हमारी अनुपस्थिति में भी कार्य निर्बाध चलता रहे ।

साथियो, एक वर्ष पहले, जब मैंने आपके सामने कुछ माँगें रखी थीं, तब मैंने कहा था कि यदि आप मुझे 'संपूर्ण सैन्य संगठन' दें तो मैं आपको एक 'दूसरा मोर्चा' दूँगा । मैंने अपना वह वचन निभाया है । हमारे अभियान का पहला चरण पूरा हो गया है । हमारी विजयी सेनाओं ने निप्योनीज सेनाओं के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर शत्रु को पीछे धकेल दिया है और अब वे हमारी प्रिय मातृभूमि की पवित्र धरती पर बहादुरी से लड़ रही हैं । अब जो काम हमारे सामने है, पूरा करने के लिए कमर कस लें । मैंने आपसे जवानों, धन और सामग्री की व्यवस्था करने के लिए कहा था । मुझे वे सब भरपूर मात्रा में मिल गए हैं । अब मैं आपसे कुछ और चाहता हूँ । जवान, धन और सामग्री अपने आप विजय या स्वतंत्रता नहीं दिला सकते । हमारे पास ऐसी प्रेरक शक्ति होनी चाहिए, जो हमें बहादुर व नायकोचित कार्यों के लिए प्रेरित करे ।

सिर्फ इस कारण कि अब विजय हमारी पहुँच में दिखाई देती है, आपका यह सोचना कि आप जीते-जी भारत को स्वतंत्र देख ही पाएँगे, आपके लिए एक घातक गलती होगी । यहाँ मौजूद लोगों में से किसी के मन में स्वतंत्रता के मीठे फलों का आनंद लेने की इच्छा नहीं होनी चाहिए । एक लंबी लड़ाई अब भी हमारे सामने है । आज हमारी केवल एक ही इच्छा होनी चाहिए-मरने की इच्छा, जिससे स्वतंत्रता की राह शहीदों के खून से बनाई जा सके । साथियो, स्वतंत्रता युद्ध के मेरे साथियो ! आज मैं आपसे एक ही चीज माँगता हूँ; सबसे ऊपर मैं आपसे अपना खून माँगता हूँ । यह खून ही उस खून का बदला लेगा, जो शत्रु ने बहाया है । खून से ही आजादी की कीमत चुकाई जा सकती है । तुम मुझे खून दो और मैं तुमसे आजादी का वादा करता हूँ ।

—०—

मौलिक सृजन

स्वाधीनता संग्राम में सुभाषचंद्र बोस का संगठक के रूप में कार्य लिखो ।

संभाषणीय

१८९३ की शिकागो की सर्वधर्म परिषद में विवेकानंद जी के भाषण के मुख्य मुद्दों पर चर्चा करो ।

लेखनीय

किसी कविता, कहानी के उद्देश्य का आकलन करो और अन्य मुद्दों को समझते हुए अर्थ का प्रभावपूर्ण लेखन करो ।

पठनीय

किसी अपरिचित/परिचित व्यक्ति का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्न निर्मिति करो और अपने सहपाठियों के गुट में पढ़कर सुनाओ ।

श्रवणीय

दूरदर्शन, रेडियो, सी.डी. पर राष्ट्रीय चेतना के गीत सुनो और सुनाओ ।

शब्द वाटिका

ब्योरा = विवरण
एहसास = अनुभव
रंगरूट = नया सिपाही
आंतरिक = भीतरी
सुचारु = बहुत सुंदर, सही ढंग
निर्बाध = निरंतर, सतत
घातक = विनाशक

मुहावरे

कंधे-से-कंधा मिलाना = डटकर सहयोग देना
कमर कसना = तैयार होना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

पाठ में आए देश

(२) उत्तर लिखो :

१. भारतीयों के सामने पेश किया गया कार्यक्रम ....
२. पूर्वी एशिया के हर कोने से आए हुए ....
३. स्वतंत्रता की राह इससे बनाई जा सकेगी ....
४. हमारे स्वातंत्र्य संघर्ष का आधार ....

(३) टिप्पणी लिखो :

१. नेताजी सुभाषचंद्र बोस की माँग और वादा

भाषा बिंदु

(अ) निम्नलिखित वाक्यों के काल के भेद लिखो :

१. बच्चे अब घर आ रहे होंगे । ____________________
२. हम अल्मोड़ा पहुँच रहे थे । ____________________
३. भारत के अंदर एक विराट आंदोलन चल रहा है । ____________________
४. उदयशंकर ने अपनी नृत्यशाला यहीं बनाई थी । ____________________
५. हमें पर्याप्त संख्या में रंगरूट मिल गए हैं । ____________________
६. आप जीते-जी भारत को स्वतंत्र देख ही पाएँगे । ____________________
७. मैं तुमसे आजादी का वादा करता हूँ । ____________________
८. बच्चों को आप भूख से तड़पते देखे होंगे । ____________________

उपयोजित लेखन

निबंध लिखो – मेरा प्रिय वैज्ञानिक

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

कैप्टन लक्ष्मी की जानकारी अंतरजाल से प्राप्त करके लिखो ।

I6H6XY